Special Issue- March 2019

ISSN No. 2319 - 5908

An International Multidisciplinary Refereed Research Quarterly Journal

शोध संदर्श

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

Chief Editor :

Dr. V.K. Pandey

Editor :

Dr. V.K. Mishra

Dr. V.P. Tiwari

UGC Approved Journal No.-41329

SCIENTIFIC JOURNAL IMPACT FACTOR SJIF No. 4.713

GENERAL IMPACT FACTOR GIF No. 1.4293

विशेषांक

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श ।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श' ।।

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

Sr. No	Name of Research Scholar	Title of Paper	Page no.
61	वाघेला सचिनकुमार अशोकभाई	बरवाला (घेला शाह) सत्याग्रहः एक ऐतिहासिक अध्ययन	190
62	डॉ. विकास सुदाम येलमार	वारकरी संप्रदायाचे पाईक ते मार्क्सवादाचे समर्थक : कॉ. क्रांतिसिंह नाना पाटील	192
63	हर्षदा कांबळे	भारतीय स्वातंत्र्यासाठी लढ्यातील काही अज्ञात स्त्रियांचे योगदान	194
64	कु. सृष्टी संजय चाळके	महाराष्ट्रातील स्वातंत्र्य पूर्व काळातील ब्रिटीश विरोधी उठाव	196
65	प्रा. सौ.संयोगिता शिरीष सासने	''भारताचे पोलादी पुरूष - सरदार वल्लभभाई पटेल''	198
66	प्रा.यशवंत हरताळे	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक व सामाजिक चळवळीतील स्थान.	202
67	सिध्दनाथ मधूकर गाडे	कॅप्टन लक्ष्मी स्वामीनाथन यांची स्वातंत्र्य चळवळीतील कामगिरी	204
68	श्री.ठोकळे शरद तानाजी	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय शेती	206
69	गाभणे हेमा गजानन	''प्रा.वि.गो.विजापूरकर यांचे कांतिकार्य	207
70	DR. PRABHAVATI A.PATIL	THE UNSUNG HEROISM OF MADAM BHIKHAJI CAMA	210
71	Dr. Dhanaji Baburao Masal	REBELLIOUS FEMALE SOCIAL REFORMER – PANDITA RAMABAI	213
72	डॉ. आरिफ शौकत महात	राष्ट्र निर्माण में "राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा" की भूमिका	217
73	प्रा.अनिल दत्तात्रय कोकाटे	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे कृषी व जलधोरण	219
74	Dr. Leelawati Arvind Patil	Rabindranath Tagore's Views on Nationalism: A Perspective	221
75	डॉ. प्रा. शर्मिला बाळासाहेब घाटगे	शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे : शिक्षणाचा दिपस्तंभ	223
76	Mr. Chobe Nagnath Mahadev	Non-cooperation Movement and Freedom Struggle	225
77	Mr. Bhimashankar M. Birajdar	'Green Ideology of Mahatma Gandhi in Environmental Movements in India: An Environmental History Perspective '	228
78	Dr. S. Y. Hongekar	शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे स्वातंत्र्यलढ्यातील कार्य	232

Scanned by CamScanner

राष्ट्र निर्माण में ''राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा'' की भूमिका

डॉ. आरिफ भौकत महात
सहायक प्राध्यापक,
विवेकानंद महाविद्यालय,(स्वायत्त) कोल्हापुर।
मो. नं. 9860857089
ई मेल – drmahatas@gmail.com

राष्ट्रीयता की भावना हिंदी साहित्य में आदिकाल से परिलक्षित होती है। आदिकालीन रासो साहित्य में राष्ट्रीय भावना उजागर हुई है, परंतु यह राष्ट्रीय भावना संकुचित थी। राष्ट्र अखंड भारत के रूप में नहीं बल्कि प्रादेशिक स्वरूप में था। सन् 1857 के स्वातंत्रता संग्राम के दौरान उभरी राष्ट्रीयता अखंड भारत के रूप में व्यक्त हुई है। वास्तविक रूप में अंग्रेजी दासता में भारतियों की राष्ट्रीयता का विकास पूर्ण रूप में हुआ। हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग से राष्ट्रीय भावना दिखाई देती है, लेकिन यह राष्ट्रीयता का प्रारंभिक स्वरूप था। वस्तुतः गांधी जी के नेतृत्व के दौरान राष्ट्रीय भावना का पूर्ण विकास दिखाई देता है। इस भावना को प्रभावी बनाने में और विकसित करने में तत्कालिन राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों की अहम भूमिका रही।

भारतेंदु और द्विवेदी कालिन कविता में राष्ट्रीयता का स्वर सुनाई देता है। सन् 1918 से छायावादी कविता का दौर शुरू हुआ, लेकिन इस वैयक्तिक कविता के साथ–साथ राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत कविता लिखी गई जिसे राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा के रूप में पहचान मिली। इस धारा की कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नविन', जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद', सुभद्राकुमारी चौहान, सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि कवि प्रमुख हैं। इन कवियों ने राष्ट्रीयता के स्वर को अपनी कविताओं में शब्दबद्ध किया। माखनलाल चतुर्वेदी तो हिंदी साहित्य में ''एक भारतिय आत्मा'' के उपनाम से ही परिचित हैं। उनकी कविताओं में देश के प्रति असिम भावना दिखाई देती है। देश के प्रति जनसामान्य में आत्म बलिदान की भावना को जागृत करने का काम इन्होंने किया। जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद' जी ने दलित, शोषित, मजदूर, किसान आदियों के जीवन का मार्मिक चित्रण कर देश में नवजागरण एवं नवनिर्माण का संदेश दिया। सुभद्राकुमारी चौहान जी ने अतित गौरव वर्णन कर देश के लिए वीर मरण प्राप्त झांशी की राणी का स्मरण कर वर्तमान युवा में देशप्रेम को जागृत करने का सफल प्रयास किया।

इन कवियों की प्रेरना के केंद्रबिंदु अनेक रहें। तत्कालिन समय में ''अँग्रेजी राज में जन जीवन पिसा जा रहा था और मनुष्य की जन्मसिद्ध स्वातंत्र्येच्छा घुट रही थी। देश की विपन्नावस्था और स्वातंत्र्येच्छा राष्ट्रीय कविता की मूल प्रेरणा है। इस भावना को प्रभावित करनेवाले दो विचारधाराएँ प्रथम महायुद्ध के बाद प्रकट हुई। एक गांधीवाद, दो साम्यवाद। अपनी प्रवृत्ति में गांधीवाद और साम्यवाद एक दूसरे के भिन्न हैं। गांधीवाद आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, सत्याग्रह, अहिंसा आदि बातों पर बल देता है, जब कि साम्यवाद साधनशुचिता की चिंता नहीं करता। परंतु पराधीनता में दोनों का लक्ष्य एक ही था आकैर वह था, स्वतंत्रता की प्राप्ति। इसलिए राष्ट्रीय भावना के विकास में इन दोनों विचार–धाराओं की सहायता मिली।'' [1] स्पष्ट रूप में परातंत्र की बेड़ियों की आजादी के साथ इन कवियों की कविता राष्ट्र के विकास पथ पर अग्रेसित नजर आती है। इन्होंने नव राष्ट्र निर्माण की भूमिका भी अपनी कविताओं में उजागर की, जिसमें स्वतंत्रता, समता, बंधुता, एकता के साथ राष्ट्र के नव निर्माण का स्वर सुनाई देता है।

स्वतंत्रता :–

भारतीय जनता अब पूरी तरह से अँग्रेजी शासन की गुलामी से निजात पाना चाहती थी। देश में चल रहा राजनीतिक एवं सामाजिक नवजागरण इनमें लड़ने की हिम्मत जुटा रहा था। इन कवियों ने इनकी इन भावना को हवा देने का कार्य बखूबी किया। देश के प्रति मर मिटने की भावना को जागृत करने का कार्य किया। माखनलाल चतुर्वेदी अपनी कविता ''पुष्प की अभिलाषा'' के माध्यम से नवयुवकों में देश के लिए आत्म बलिदान की भावना को जगाने का प्रयास करते हैं –

'' चाह नहीं मैं सुरबाला के / गहनों में गूँथा जाउँ
चाह नहीं, प्रेमी–माला में / बिंध प्यारी को ललचाउँ
चाह नहीं, सम्राटों के शव/ पर हे हरि, डाला जाउँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर/ चढ़ूँ भाग्य पर इठलाउँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली/ उस पथ पर देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने/ जिस पथ जावें विर अनेक''

इस कविता ने वैचारिक क्रांति की। देश के हर वर्ग में राष्ट्रप्रेम की भावना को विकसित किया और देश के लिए आत्म बलिदान की इच्छा को हर दिल में अंकुरित किया।

सुभद्राकुमारी चौहान जी ने झांसी की रानी का स्मरण करते हुए सिर्फ युवाओं में नहीं तो देश के युवतियों, स्त्रियों में देशप्रेम का अलख जगाया। उनकी ''खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी'' कविता आज भी नसों में देशप्रेम की ज्वाला प्रवाहित करती है। वास्तविकता में देश के प्रति इलिदान की भावना इस दौर की कविता की मुखर वाणी बन गई। मैथिलिशरण गुप्त लिखते हैं –

''स्वतंत्रता के अर्थ हमारे
निकट कौनसा मूल्य महान?

Scanned by CamScanner

धन क्या, यह जीवन भी अपना,
कर दे हम उस पर बलिदान ''

इस काल की कविता ने राष्ट्र की वंदना भी की है। जयशंकर प्रसाद की कविता ''अरुण यह मधुमय देश हमारा'' में राष्ट्रीवाद का व्यापक रूप देखने मिलता है।

यह वह दौर था जहाँ गांधीवाद के साथ राष्ट्रीय राजनीति में क्रांतिकारी दल भी अग्रेसित था। भगत सिंह, सुखदेव एवं राजगुरू के बलिदान ने क्रांति की भावना को प्रज्वलित किया था। नविन जी ''विप्लव गायन'' कविता द्वारा क्रांति की ज्वाला को और मजबूत करते हैं –

'' कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल पुथल मच जाए
एक हिलोर इधर से आए
एक हिलोर उधर से आए'' [2]

कवि सुमन स्वतंत्रता आंदोलन को विप्लव पर्व मानते हैं। कुल मिलाकर इस दौर की कविता देश को परातंत्र की बेड़ियों से आजाद कराने के लिए देशवासियों में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत करने में सफल हुई है।

समता,बंधुता एवं एकता की भावना :–

इन कवियों ने राष्ट्र की भलाई के लिए समता,बंधुता एवं एकता के महत्त्व को पहचाना और इसे अपनी कविता का विषय बनाया। देश में बसनेवाले विभिन्न धर्म, जात, संप्रदाय आदि में एकता एवं बंधुता की भावना को प्रवाहित किया। हिंदू–मुस्लिम की विनाशकारी फुट, छूआछूत आदि से ये कवि तिलमिला उठते। शिवमंगलसिंह 'सुमन' जी ने भेदाभेद मिटाकर मानवता का संदेश अपनी कविता में दिया है –

''छोटें–मोटे मतभेदों को गंगाजी में बोरो
विश्व–शांति के अभिमानों का हम तो दम भरते हैं,
जाति–वर्ग की छोटी–मोटी दीवारों को तोड़ो
मसनवता का फार्म बनेगा, गोडो, मिट्टी गोडो''

इनकी ये कविता आज भी उतनी ही प्रासंगिक लगती है। इन कवियों ने छूआछूत और वर्ण व्यवस्था को देश, समाज और मानवता के लिए हानीकारक माना। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने तो इस समाज व्यवस्था से पीड़ित समुदाय को विद्रोह करने की सलाह दी है। इन कवियों ने देशहित सिर्फ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में न देखकर भविष्य के संदर्भ में भी देखा। इसी खातीर इन्होंने देश की भलाई के खातीर समता,बंधुता एवं एकता की भावना को मुखर वाणी दी। क्योंकि वे जानते थे विविधता के मोतियों से भरे इस देश को एक सूत्र में पिरोने का काम समता,बंधुता एवं एकता की डोर ही कर सकती है।

नवराष्ट्र का निर्माण :–

इन कवियों का लक्ष्य तत्कालीन अँग्रेजी सत्ता के गुलामी के खात्में का भले ही था लेकिन ये जानते थे, कि अँग्रेजी गुलामी के खात्में के साथ सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कटुता को मिटाना भी जरूरी है। वो आजादी के साथ नवराष्ट्र के निर्माण की भूमिका भी अपने कविताओं में व्यक्त करते हैं। जिन कारणों से हम गुलाम बने वही कमजोरियाँ वो स्वतंत्र भारत में नहीं चाहते थे। यही कारण है कि सामाजिक, धार्मिक भेदभाव को दूर करने को वो प्राथमिकता देते थे। शिवमंगलसिंह 'सुमन' नए राष्ट्र का स्वप्न देखते हुए कहते हैं –

''सामूहिक खेती होगी अब
सामूहिक श्रमदान,
– – – – – –
शांति प्रेम संबोधि वृक्ष
फिर भारत में पनपा लो
– – – – – –
नई फसल बोने का दिन है
ज्योति बीज बिखराओ,
नया मोड़ इतिहास ले रहा,
आगे कदम बढ़ाओ।''

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि देश की स्वतंत्रता में राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा के कवियों ने अपना योगदान देने के साथ नवराष्ट्र के निर्माण की बात कही है। ये सिर्फ बात कर कर नहीं रुकते बल्कि नवराष्ट्र की संकल्पना को व्यक्त करते हुए समता, बंधुता एवं एकता के महत्त्व को उजागर करते हैं। साथ ही सामाजिक न्याय की भूमिका स्पष्ट करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ. सुधाकर गोकाककर – आधुनिक हिंदी कविता, पृष्ठ क्र. 93
2. कविता कोश 'नविन' – गुगल

Scanned by CamScanner